PARISH OF CHRIST CHURCH

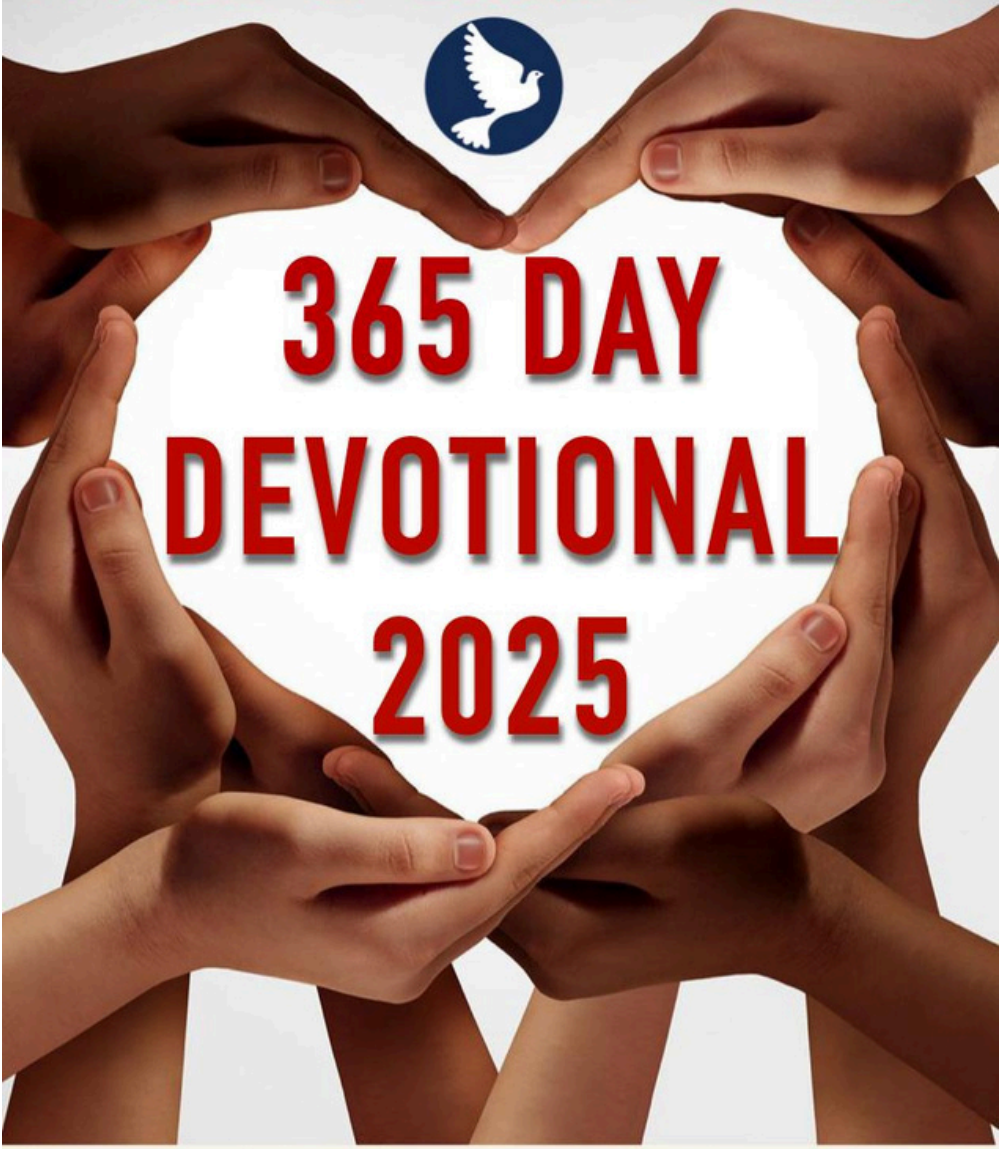

365 DAY DEVOTIONAL 2025

"An inspiring daily guide to draw closer to God, grow in love for one another, and live out the call of discipleship. Discover God's truth each day and allow it to transform your life, your relationships, and your faith community."

POCC दैनिक भक्ति 2025
365- दैनिक भक्ति के लिए ढांचा

पहली तिमाही - दिन 1-90
परमेश्वर से प्रेम करना (व्यक्तिगत भक्ति जीवन को गहरा करना)

ध्यान केन्द्र : व्यक्तिगत भक्ति, प्रार्थना जीवन और पवित्रशास्त्र पढ़ने को मजबूत करना।
विषय:परमेश्वर पर भरोसा करना, विश्वास में बढ़ना, परमेश्वर के प्रेम को समझना, आज्ञाकारिता।

दूसरी तिमाही - दिन 91-180: एक दूसरे से प्रेम करना
(समाज का निर्माण)

ध्यान केन्द्र: कलीसिया में रिश्तो को विकसित करना, जवाबदेही को बढ़ावा देना और एक दूसरे की सेवा करना।
विषय: एकता, क्षमा, सेवा, मित्रता, एक दूसरे को प्रोत्साहित करना।

तीसरी तिमाही - दिन 181-270: सुसमाचार को जीना
(शिष्यता और सुसमाचार प्रचार)

ध्यान केन्द्र: दैनिक जीवन में शिक्षाओं को लागू करना, सुसमाचार को साझा करना और मसीह के शिष्यों के रूप में जीना।
विषय: गवाही देना, सुसमाचार प्रचार करना, अपने विश्वास को जीना, नमक और ज्योति बनना।

4 तिमाही - दिन 271-365: मसीह के प्रेम पर चिंतन करना
(आत्मिक विकास और परिपक्वता)

ध्यान केन्द्र: आत्मिक परिपक्वता में बढ़ना, मसीह के चरित्र पर चिंतन करना, और पवित्रता का अनुसरण करना।
विषय: पवित्रीकरण, मसीह जैसा चरित्र, दृढ़ता, आत्मिक फल।

सबसे बड़ी आज्ञा

1 Jan: दिन 1: सबसे बड़ी आज्ञा

मत्ती 22:37-40

"यीशु ने उत्तर दिया, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।"

चिंतन: विचार करें कि अपने पूर्ण अस्तित्व के साथ परमेश्वर से प्रेम करने का क्या अर्थ है। आप प्रति दिन की शुरुआत उस पर केंद्रित होकर कैसे कर सकते हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको प्रति दिन उससे अधिक गहराई से प्रेम करने में मदद करे।

2 Jan: दिन 2: सबसे बड़ी आज्ञा

व्यवस्थाविवरण 6:4-9

“ “हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।; और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझको सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बाँधना, और ये तेरी आँखों के बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने-अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।”

चिंतन: आप अपनी दैनिक दिनचर्या और बातचीत में परमेश्वर के प्रेम को कैसे शामिल कर सकते हैं?

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

प्रार्थना: अपने जीवन और परिवार में परमेश्वर की आज्ञाओं को केंद्रीय रखने के तरीके के बारे में मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें।

3 Jan: दिन 3: सबसे बड़ी आज्ञा

मरकुस 12:28-31

"और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया, उससे पूछा, "सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है?" यीशु ने उसे उत्तर दिया, "सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है: 'हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।' और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।' इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।"

चिंतन: आज आप किन तरीकों से अपने पड़ोसी से अपने समान सक्रिय रूप से प्रेम कर सकते हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से ऐसा हृदय माँगें जो दूसरों से निस्वार्थ भाव से प्रेम करे, जैसा उसने आपसे प्रेम किया है।

4 Jan: दिन 4: सबसे बड़ी आज्ञा

यूहन्ना 14:15

“यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।”

चिंतन: आपके जीवन के किन क्षेत्रों में परमेश्वर की आज्ञाओं का अधिक पालन करने की आवश्यकता है?

प्रार्थना: परमेश्वर के वचन का पूरी तरह से पालन करने की शक्ति और इच्छा के लिए प्रार्थना करें।

5 Jan: दिन 5: सबसे बड़ी आज्ञा

1 यूहन्ना 4:19-21

“हम इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उसने हम से प्रेम किया। यदि कोई कहे, “मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ,” और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता। और उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।

चिंतन: इस बात पर चिंतन करें कि परमेश्वर का आपके प्रति प्रेम दूसरों के प्रति आपके प्रेम को कैसे प्रभावित करना चाहिए। क्या ऐसे कोई रिश्ते हैं जहाँ आपको अधिक प्रेम दिखाने की आवश्यकता है?

प्रार्थना: परमेश्वर से अपने हृदय को उसके प्रेम से भरने के लिए कहें ताकि आप दूसरों से सच्चा प्रेम कर सकें।

6 Jan: दिन 6: सबसे बड़ी आज्ञा

भजन 119:10-11

“मैं पूरे मन से तुझे ढूँढ़ता हूँ; मुझे तेरी आज्ञाओं से भटकने न दे। मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है, कि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।”

चिंतन: आप अपने दैनिक कार्यों का मार्गदर्शन करने के लिए परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बेहतर तरीके से कैसे संजो सकते हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर के वचन को जानने और उसका पालन करने की गहरी इच्छा के लिए प्रार्थना करें।

7 Jan: दिन 7: सबसे बड़ी आज्ञा

नीतिवचन 3:5-6

“तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर
भरोसा रखना; उसी को स्मरण करके अपने सब काम करना, तब
वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।”

चिंतन: अपने जीवन में आपको कहाँ पर परमेश्वर पर अधिक भरोसा करने और अपनी समझ पर कम निर्भर रहने की आवश्यकता है?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उस पर पूर्णतः भरोसा करने में सहायता करे और आपके सभी निर्णयों में आपका मार्गदर्शन करे।

परमेश्वर पर भरोसा करना

8 Jan: दिन 8: परमेश्वर पर भरोसा करना

भजन संहिता 23:1-4

"दाऊद का भजन यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। वह मुझे हरी-हरी चराइयों में बैठाता है;वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; वह मेरे जी में जी ले आता है। धार्मिकता के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुआई करता है। चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ, तो भी हानि से न डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।

चिंतन: यहोवा आपका चरवाहा है, इस बात को जानना, जीवन की चुनौतियों के प्रति आपके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करता है?

प्रार्थना: कठिन समय में परमेश्वर के मार्गदर्शन और शान्ति की गहरी भावना के लिए प्रार्थना करें।

9 Jan: दिन 9: परमेश्वर पर भरोसा करना

यशायाह 26:3-4

जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है।

चिंतन: दृढ़ मन रखने का क्या अर्थ है, और आप इसे कैसे विकसित कर सकते हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उस पर पूरी तरह भरोसा करने और उसकी पूर्ण शांति का अनुभव करने में मदद करे।

10 Jan: दिन 10: परमेश्वर पर भरोसा करना

भजन 27:1

“यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूँ? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किसका भय खाऊँ?

चिंतन: परमेश्वर को अपनी ज्योति और उद्धार समझना भय के प्रति आपकी प्रतिक्रिया को कैसे बदल सकता है?

प्रार्थना: साहस के लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर की सुरक्षा और मार्गदर्शन पर भरोसा करें।

11 Jan: दिन 11: परमेश्वर पर भरोसा करना

यिर्मयाह 29:11-13

“क्योंकि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा। तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझसे प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूँगा। तुम मुझे अपने सम्पूर्ण हृदय से ढूंढोगे और पाओगे भी।

चिंतन: यह जानना कि परमेश्वर के पास आपके लिए अच्छी योजनाएँ हैं, उस पर आपके भरोसे को कैसे प्रभावित करती हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको पूरे हृदय से उसकी खोज करने और अपने जीवन के लिए उसकी योजनाओं पर भरोसा रखने में सहायता करे।

12 Jan: दिन 12: परमेश्वर पर भरोसा करना

भजन 46:10

“वह कहता है, चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।
मैं जातियों में महान हूँ, मैं पृथ्वी भर में महान हूँ!”

चिंतन: परमेश्वर पर भरोसा करने के संदर्भ में “चुप रहो” का क्या अर्थ है?

प्रार्थना: शांत रहने और अपने जीवन में परमेश्वर की प्रभुता को पूरी तरह से पहचानने की क्षमता के लिए प्रार्थना करें।

13 Jan: दिन 13: परमेश्वर पर भरोसा करना

नीतिवचन 16:3

“अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इससे तेरी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी।”

चिंतन: अपने जीवन के किन क्षेत्रों में आपको प्रभु को पूरी तरह से समर्पित होने की आवश्यकता है?

प्रार्थना: परमेश्वर से कहें कि वह अपनी योजनाओं को स्थापित करे और आपके कार्यों को अपनी इच्छा के अनुसार निर्देशित करे।

14 Jan: दिन 14: परमेश्वर पर भरोसा करना

फिलिप्पियों 4:6-7

किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।

चिंतन: आप इस आयत को चिंता कम करने और परमेश्वर पर भरोसा बढ़ाने के लिए कैसे लागू कर सकते हैं?

प्रार्थना: हर परिस्थिति में अपने हृदय और मन की रक्षा के लिए परमेश्वर की शांति के लिए प्रार्थना करें।

विश्वास में बढ़ना

15 Jan: दिन 15 : विश्वास में बढ़ना

इब्रानियों 11:1

“अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।”

चिंतन: आप अभी अपने जीवन में किस चीज़ की उम्मीद कर रहे हैं, और विश्वास उन आशाओं में आपके आत्मविश्वास को कैसे आकार देता है?

प्रार्थना: एक ऐसे मज़बूत विश्वास के लिए प्रार्थना करें जो तब भी परमेश्वर के वायदों पर भरोसा करता हो जब आप परिणाम नहीं देख सकते।

16 Jan: दिन 16 : विश्वास में बढ़ना

रोमियों 10:17

“इसलिए विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।”

चिंतन: आप अपने विश्वास को मज़बूत करने के लिए परमेश्वर के वचन को सुनने और पढ़ने को अपने जीवन का एक और नियमित हिस्सा कैसे बना सकते हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उसके वचन को पढ़ने और सुनने में और अधिक मेहनती बनने में मदद करे।

17 Jan: दिन 17 : विश्वास में बढ़ना

याकूब 1:2-4

“हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो
इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे
विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।
पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध
हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।”

चिंतन: आप अपने सामने आने वाली परीक्षाओं को किस तरह देखते हैं, और आप उन्हें विश्वास में वृद्धि के अवसर के रूप में कैसे देख सकते हैं?

प्रार्थना: परीक्षाओं में आनन्द पाने की क्षमता और अपने विश्वास में दृढ़ता को मजबूत करने के लिए प्रार्थना करें।

18 Jan: दिन 18 : विश्वास में बढ़ना

2 कुरिन्थियों 5:7

“ क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।”

चिंतन: अपने जीवन के किन क्षेत्रों में आप परमेश्वर के वायदों पर भरोसा करने के बजाय जो आप देख सकते हैं उस पर बहुत अधिक निर्भर हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको और अधिक विश्वास से जीने में और उसकी अदृश्य योजनाओं और उद्देश्यों पर भरोसा करने में मदद करे,।

19 Jan: दिन 19 : विश्वास में बढ़ना

गलातियों 2:20

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आपको दे दिया।"

चिंतन: यह समझना कि मसीह आप में रहता है, आपके दैनिक जीवन जीने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है?

प्रार्थना: अपने अंदर रहने वाले मसीह के बारे में गहरी जागरूकता और उसके प्रेम और बलिदान को प्रतिबिंबित करने वाले विश्वास के लिए प्रार्थना करें।

20 Jan: दिन 20 : विश्वास में बढ़ना

इफिसियों 2:8-9

“क्योंकि अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, विश्वास के द्वारा —और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है—न कि कर्मों के द्वारा, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।”

चिंतन: यह पहचानना कि उद्धार अनुग्रह का उपहार है, विश्वास और कर्मों की आपकी समझ को कैसे प्रभावित करता है?

प्रार्थना: अनुग्रह के उपहार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें और ऐसे हृदय के लिए प्रार्थना करें जो इस सत्य की पूरी तरह सराहना करे और इसे जिए।

21 Jan: दिन 21 : विश्वास में बढ़ना

1 पतरस 1:8-9

“उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है, और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो। ”

चिंतन: यीशु को देखे बिना उस पर विश्वास करना आपके दैनिक आनन्द और उस पर भरोसे को कैसे प्रभावित करता है?

प्रार्थना: भौतिक प्रमाण के अभाव में भी, यीशु में गहरे, अडिग आनन्द और विश्वास के लिए प्रार्थना करें।

परमेश्वर के प्रेम को समझना

22 Jan: दिन 22: परमेश्वर के प्रेम को समझना

यूहन्ना 3:16

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

चिंतन: परमेश्वर के आपके प्रति असीम प्रेम को समझना आपके दैनिक जीवन और रिश्तों को कैसे प्रभावित करता है?

प्रार्थना: परमेश्वर के बलिदानपूर्ण प्रेम के लिए धन्यवाद दें और उसके अनन्त जीवन के उपहार की गहरी सराहना कर पाने के लिए प्रार्थना करें।

23 Jan: दिन 23: परमेश्वर के प्रेम को समझना

रोमियों 5:8

“परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।”

चिंतन: अपने लिए मसीह के बलिदान के महत्व पर चिंतन करें, जो तब हुआ जब आप इसके योग्य नहीं थे। यह परमेश्वर के प्रेम के बारे में आपके दृष्टिकोण को कैसे आकार देता है?

प्रार्थना: ऐसे हृदय के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर के प्रेम की गहराई को पूरी तरह से समझ सके और उसका प्रतिउत्तर दे सके।

24 Jan: दिन 24: परमेश्वर के प्रेम को समझना

1 यूहन्ना 4:9-10

" जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया पर इसमें है, कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा। "

चिंतन: यह ज्ञान कि परमेश्वर ने पहले आपसे प्रेम किया और अपने पुत्र को आपके लिए भेजा, उसके साथ आपके रिश्ते को कैसे प्रभावित करता है?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको अपने प्रेम के प्रकाश में जीने और दूसरों को वह प्रेम दिखाने में आपकी मदद करे।

25 Jan: दिन 25: परमेश्वर के प्रेम को समझना

भजन 136:1

"यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी करुणा सदा की है।"

चिंतन: आपके लिए इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर का प्रेम सदा बना रहता है, चाहे आपकी परिस्थितियाँ कैसी भी हों?

प्रार्थना: परमेश्वर के चिरस्थायी प्रेम के लिए उसकी स्तुति करो और उससे कहें कि वह हर परिस्थिति में उसकी भलाई को याद रखने में आपकी सहायता करे।

26 Jan: दिन 26: परमेश्वर के प्रेम को समझना

इफिसियों 3:16-19

“ कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ, और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डालकर, सब पवित्र लोगों के साथ भली भाँति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ। ”

चिंतन: आप अपने जीवन में मसीह के प्रेम के विशाल आयामों को बेहतर तरीके से कैसे समझ सकते हैं?

प्रार्थना: मसीह के प्रेम की पूरी सीमा को जानने और अनुभव करने के लिए शक्ति और समझ के लिए प्रार्थना करें।

27 Jan: दिन 27: परमेश्वर के प्रेम को समझना

1 यूहन्ना 3:1

“देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ, और हम हैं भी; इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।”

चिंतन: परमेश्वर की सन्तान कहलाने से आपकी पहचान और दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

प्रार्थना: आपको अपनी सन्तान बनाने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें और इस पहचान को आत्मविश्वास और खुशी के साथ जीने में मदद माँगें।

28 Jan: दिन 28: परमेश्वर के प्रेम को समझना

सपन्याह 3:17

"तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुप रहेगा; फिर ऊँचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा।"

चिंतन: आपके लिए इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर आपके कारण जयजयकार करके आनन्दित होता है? यह आपके उसके प्रति प्रेम के दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करता है?

प्रार्थना: आप में परमेश्वर की प्रसन्नता और आपके जीवन में उनकी प्रेमपूर्ण उपस्थिति के बारे में अधिक गहन जागरूकता के लिए प्रार्थना करें।

परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता

29 Jan: दिन 29 परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता

यूहन्ना 14:21

"जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है, और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा, और अपने आपको उस पर प्रगट करूँगा।"

चिंतन: परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आपकी आज्ञाकारिता किस प्रकार उसके प्रति आपके प्रेम को दर्शाती है? क्या ऐसी विशिष्ट आज्ञाएँ हैं जिन्हें मानने में आपको संघर्ष करना पड़ता है?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको प्रेमपूर्ण और इच्छुक हृदय से उसकी आज्ञाओं का पालन करने में सहायता करे।

30 Jan: दिन 30 परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता

याकूब 1:22

"परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आपको धोखा देते हैं।"

चिंतन: आप पवित्रशास्त्र से जो सीखते हैं, उसे आप किस प्रकार व्यवहार में ला रहे हैं? आप अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को लागू करने में किस प्रकार सुधार कर सकते हैं?

प्रार्थना: प्रार्थना करें कि आप वचन को सिर्फ सुनने वाले नहीं बल्कि उसे पूरा करने वाले बनने की क्षमता पाएं ।

31 Jan: दिन 31 परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता

1 शमूएल 15:22

परन्तु शमुएल ने कहा, “क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

चिंतन: आज्ञाकारिता और आराधना के बीच के संबंध पर चिंतन करें। आप धार्मिक अनुष्ठान के बजाय आज्ञाकारिता को कैसे प्राथमिकता दे सकते हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में उसकी आज्ञाकारिता को प्राथमिकता देने में मदद करे।